

वर्णों के मेल से उत्पन्न हुए विकार को सन्धि कहते हैं। सन्धि करते समय कभी-कभी एक अक्षर में, कभी-कभी दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है और कभी-कभी दोनों अक्षरों के स्थान पर एक तीसरा अक्षर बन जाता है। जैसे-

सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र,

विद्या + आलय = विद्यालय।

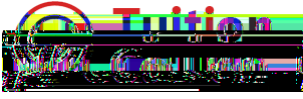
सन्धि तीन प्रकार की होती है –

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

पास-पास आने वाले स्वरों के मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं; जैसे – आलय देवालय।

जहाँ अ-आ से परे अ-आ आए, इ-ई से परे इ-ई आए, उ-ऊ से परे उ-ऊ आए तो दोनों को

वि. प्र.



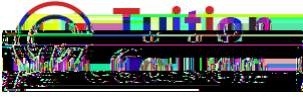
अ-आ से परे इ आए तो ए, उ आए तो ओ तथा ऋ आए तो अर् हो जाता है ; जैसे :- रमा + ईश = रमेश ; महा + ऋषि = महर्षि ।

अ-आ से परे ए-ऐ आए तो ऐ, ओ-औ आए तो दोनों के स्थान पर औ होता है ; जैसे एक + एक = एकैक ; महा + औषधि = महौषधि ।

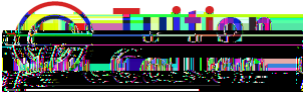
दो व्यंजनों के अथवा व्यंजन और स्वर के मेल को व्यंजन सन्धि कहते हैं ; जैसे :- दिक् + अन्तर = दिगन्तर ; जगत् + ईश = जगदीश, कृत् + अन्त = कृदन्त ।

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो सन्धि होती है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं ; जैसे :- निः + चय = निश्चय ; अधः + गति = अधोगति ; प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय ।

- ☐ (A) विसर्ग सन्धि
- ☐ (B) स्वर सन्धि
- ☐ (C) व्यंजन सन्धि
- ☐ (D) नपुंसक



- ☐ (A) सृष्ट्यंतर
- ☐ (B) गृहांतर
- ☐ (C) गृहन्तर
- ☐ (D) गृहअंतर



- ☐ (A) स्वर सन्धि
- ☐ (B) विसर्ग सन्धि
- ☐ (C) व्यंजन सन्धि
- ☐ (D) लिंग सन्धि

- ☐ (A) देवेन्द्र
- ☐ (B) देविन्द्र
- ☐ (C) देवेंद्र
- ☐ (D) देविंद्र

- ☐ (A) शिवालय
- ☐ (B) शिवालयः
- ☐ (C) शिवालयं
- ☐ (D) शिवालयि

- ☐ (A) प्रात्यक्ष
- ☐ (B) प्रत्यक्ष
- ☐ (C) प्रतयक्ष
- ☐ (D) प्रत्यक्षः

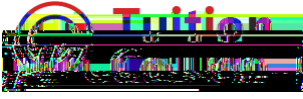


- ☐ (A) गजस्ति
- ☐ (B) गज्यस्ति
- ☐ (C) गजास्ति
- ☐ (D) गजस्ति

- ☐ (A) तज्जन
- ☐ (B) तत्जन
- ☐ (C) तजजन
- ☐ (D) तजन



- ७
- ७
- ☐ (A) लोकद्वार
 - ☐ (B) लोकोद्वार
 - ☐ (C) लोकद्वार
 - ☐ (D) लोकदधार



- ☐ (A) गुरोपदेश
- ☐ (B) गुरूपदेश
- ☐ (C) गुरूपदेश्य
- ☐ (D) गुरूपदेश

- ☐ (A) दो
- ☐ (B) तीन
- ☐ (C) चार
- ☐ (D) पाँच

- ☐ (A) जोड़ना
- ☐ (B) तोड़ना
- ☐ (C) मिलाना
- ☐ (D) अलग करना